हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण

युनिट-2

(1) विशेषण की परिभाषा और उसके भेद ।
(2) वाक्य की परिभाषा और उसके भेद ।
(3) उपसर्ग और प्रत्यय की परिभाषा और उसके भेद ।

युनिट-2

प्र.1 विशेषण की परिभाषा और इसके भेद की चर्चा कीजिए ।

➢ **परिभाषा:**

जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएँ उसे विशेषण कहते हैं। दूसरे शब्द में विशेषण एक ऐसा विकारी

शब्द है जो हर हालत में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है। संक्षिप्त में विशेषण की परिभाषा इस प्रकार से दे सकते हैं। किसी भी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया की विशेषता बताए अथवा गुण, दोष आदि का बोध करनेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं । **जैसे–**हिन्दी मधुर भाषा है। वह सत्यवादी व्यक्ति है। सपना लड़की है सुंदर ।

➢ विशेषण के भेदः

गुण संख्या और परिभाषा के आधार पर विशेषण के कई भेद बताए गए हैं पर मुख्य रूप से तीन विशेषण प्रमुख है जैसे –

(1) सार्वनामिक विशेषण
(2) गुणवाचक विशेषण
(3) संख्यावाचक विशेषण

(1) सार्वनामिक विशेषणः

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम विशेषण (मैं, तू, तुम, वह) के सिवाय अन्य सर्वनाम बल किसी संज्ञा के पहले आते हैं उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं, **जैसे** – वह नौकर नहीं आया । वह पुस्तक अच्छी है ।

(2) गुणवाचक विशेषणः

जिस शब्द से संज्ञा की अच्छाई, दशा और स्वभाव की विशेषता बताए उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। **जैसे** – वह विद्वान व्यक्ति है । इस दुनिया में अच्छे और बुरे आदमी हैं। दशा-दुबला, पतला, गरीब और अमीर, भला-बुरा, उचित अनुचित ।

(3) संख्यावाचक विशेषणः

वे शब्द जिनमें संज्ञा या सर्वनाम की संख्या दृष्टि गोचर होती है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - एक लड़का, पच्चीस रूपये, पच्चीस घोड़े इत्यादि ।

संख्यावाचक विशेषण में तीन मुख्य भेद बताए गए हैं ।

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषणः
जैसे - एक लड़का और एक गया।

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणः
जैसे - बहुत सारे लोग ।

(3) परिणामवाचक विशेषणः

जिस शब्द विशेषण से परिणाम का बोध होता हो उसे परिणामवाचक विशेषण कहते हैं । **जैसे -** राम तेज विद्यार्थी है अथवा मोहन परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ ।

प्र.2 वाक्य की परिभाषा और उसके भेद

❖ **वाक्य की परिभाषाः** एक विचार पूर्णता से प्रकट करनेवाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं । वाक्य में मुख्य रूप से दो अवयव्य होते हैं ।

जैसे - (1) उद्देश्य (2) विधेय (विधान)

(1) उद्देश्यः

जिस एक वस्तु के विषय में कुछ कहा जाए उसे सूचित करनेवाले शब्द को उद्देश्य कहते हैं। जैसे – आत्मा अमर है । राम ने रावण को मारा ।

(2) विधेयः

उद्देश्य के विषय में जो विधान किया जाता है उसे सूचित किए जानेवाले शब्द को विधेय कहते हैं ।

जैसे – आत्मा – अमर ।

❖ वाक्य के भेदः

रचना के अनुसार वाक्य के तीन भेद हैं ।

(1) साधारण वाक्यः जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय रहता है उसे साधारण वाक्य क्यों कहते हैं ।

जैसे – आज ठंडी पड़ रही है ।
बिजली चमकी ।

(2) मिश्र वाक्यः

जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के सिवाय अधिक शब्द हो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं ।
जैसे – वह कौन सा मनुष्य है जो रावण का नाम नहीं सुना होगा ।

(3) संयुक्त वाक्यः

जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल रहता है उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं । **जैसे –** राम लंका में गए, रावण को मारे और सीता को लेकर आए ।

प्र.3 उपसर्ग और प्रत्यय की परिभाषा और प्रकार बताइए ।

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते हैं जो किसी शब्द को पहले आता है । उपसर्ग दो शब्दों से होता है । उप+सर्ग = उपसर्ग ।

‘उप’ का अर्थ समीप होता है । और ‘सर्ग’ का सृष्टि करना अर्थात् ‘उपसर्ग’ का अर्थ हुआ पास पास या समीप में हो करें नये शब्द का निर्माण करता है उपसर्ग का अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं है जब किसी शब्द के साथ कोई उपसर्ग जुड़ता है तो उसके अर्थ में बदलाव का परिवर्तन आता है ।

उपसर्ग में मूल शब्द से पहले जो शब्द जुड़ता है उसे उपसर्ग कहते हैं।

जैसे - उप+कार, आ+गमन, वि+नाश, संग+हार

इन वाक्यों के आरंभ में उप, आ, वि, संग, लगाने से इनके शब्द का अर्थ बदल जाता है । इसलिए इन्हें या इसको उपसर्ग कहते हैं ।

उपसर्ग के चार प्रकार है ।

(1) संस्कृत के उपसर्ग ।
(2) हिन्दी के उपसर्ग ।
(3) अरबी के उपसर्ग ।
(4) अंग्रेजी के उपसर्ग ।

(1) संस्कृत के उपसर्गः

अतीकाल = अति+काल

अनुकरण = अनु+करण,

अनुचर = अनु+चर

(2) हिन्दी के उपसर्गः

पराजय = परा+जय

(3) अरबी के उपसर्गः

अलबर्ता = अल+बर्ता,
खुशदिल = खुश+दिल

(4) अंग्रेजी के उपसर्गः

जैसे बेरहम = बेर+हम
इत्यादि

❖ प्रत्ययः

शब्दों के बाद जो अक्षर समूह लगाया जाता है उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय दो शब्दों से बनता है। प्रति+अय अर्थात् प्रति का अर्थ साथ में और अय का अर्थ चलनेवाले अर्थात् प्रत्यय का अर्थ हुआ शब्दों के साथ चलनेवाला अथवा लगनेवाला **जैसे-** भाला+आई = भलाई घटा 'आई' प्रत्यय है ।

❖ प्रत्यय के भेदः

मूल प्रत्यय दो प्रकार के हैं ।

(1)कृदंत

(2) तदधि

(1) कृदंत की परिभाषाः

क्रिया या धातु के अंत में प्रयुक्त होनेवाले प्रत्ययों को कृदंत प्रत्यय कहते हैं।

जैसे- गाने+वाले = गानेवाले,

नाचले+वाले = नाचने वाले।

ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया रूप देते हैं। इनसे संज्ञा और विशेषण बनते हैं।

कृदंत के मुख्य रूप से चार भेद हैं।

- क्रियार्थक संज्ञा
- कृतवाचक संज्ञा
- वर्तमान कालिक संज्ञा
- भूतकालिक कृदंत

संस्कृत के कृत प्रत्यय और संज्ञाएँ
कृत प्रत्यय धातु भाववाचक संज्ञा ।

प्रत्यय	धातु	भाववाचक	संज्ञा
अ	कम	काल	(करना)
आना	विद्	वेदना	

❖ तदधि प्रत्यय की परिभाषाः

संज्ञा सर्वनाम और विशेषण के अंत में लगनेवाले प्रत्यय का तदधि प्रत्यय कहा जाता है ।

जैसे - मानव+ता = मानवता,

अपना+पन = अपनापन ।

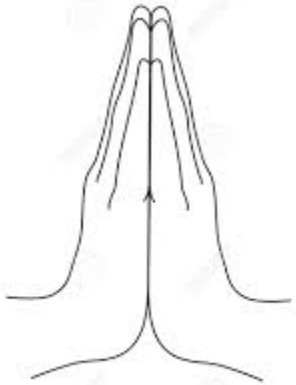

धन्यवाद